राम और सीता

बहुत समय पहले अयोध्या पर दशरथ नाम के एक राजा राज्य करते थे. जब वह बूढ़े हो गये तो उन्होंने अपने सबसे प्रिय पुत्र राम को अपना राज्य सौंपने का निर्णय लिया. लेकिन राजा दशरथ की एक रानी चाहती थी कि उसके बेटे, राजकुमार भरत, को अयोध्या का राजा बनाया जाये. वह जानती थी कि दशरथ उससे इतना प्रेम करते थे कि वह उसकी हर कामना पूरी कर देंगे. इसलिए वह दशरथ के पास गई और उनसे कहा कि राम को वह चौदह वर्ष के लिए दंडक वन में भेज दें और भरत को अयोध्या का राजा बना दें. यद्यपि उसकी बात सुन कर राजा बहुत क्रोधित और दुःखी हुए परन्तु उन्होंने रानी की दोनों बातें स्वीकार कर लीं.

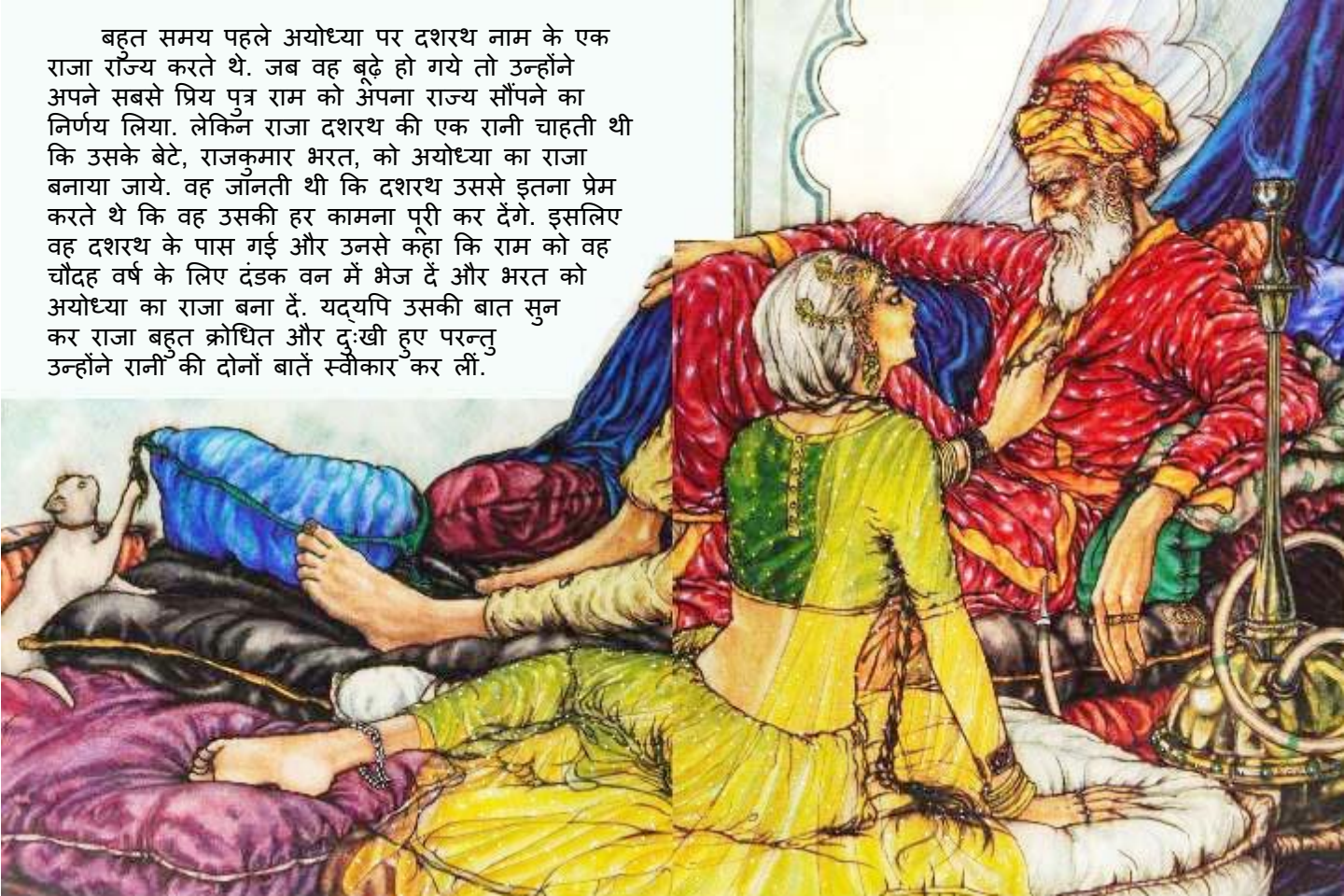

अगले दिन, पिता का महल छोड़ कर, अपनी पत्नी सीता और छोटे भाई लक्ष्मण के साथ राम दंडक के घने वन में चले गये. रास्ते में एक वृद्ध ऋषि ने उन्हें बताया कि वन के अन्दर कई राक्षस रहते थे. अपनी रक्षा करने हेतु राम को उस ऋषि ने कई दैवी अस्त्र-शस्त्र दिए और उन्हें सुझाव दिया कि वह पंचवटी की घाटी में जाकर रहें. "वहाँ आप सुरक्षित रहेंगे," ऋषि ने कहा.

जंगलों में कई दिन चलने के बाद राम, सीता और लक्ष्मण पंचवटी पहुंचे. ऋषि के सुझाव का स्मरण करते हुए उन्होंने वहाँ मिट्टी और बांस की एक कुटिया बना ली और कई वर्षों तक प्रसन्नता से वह पंचवटी में रहे.

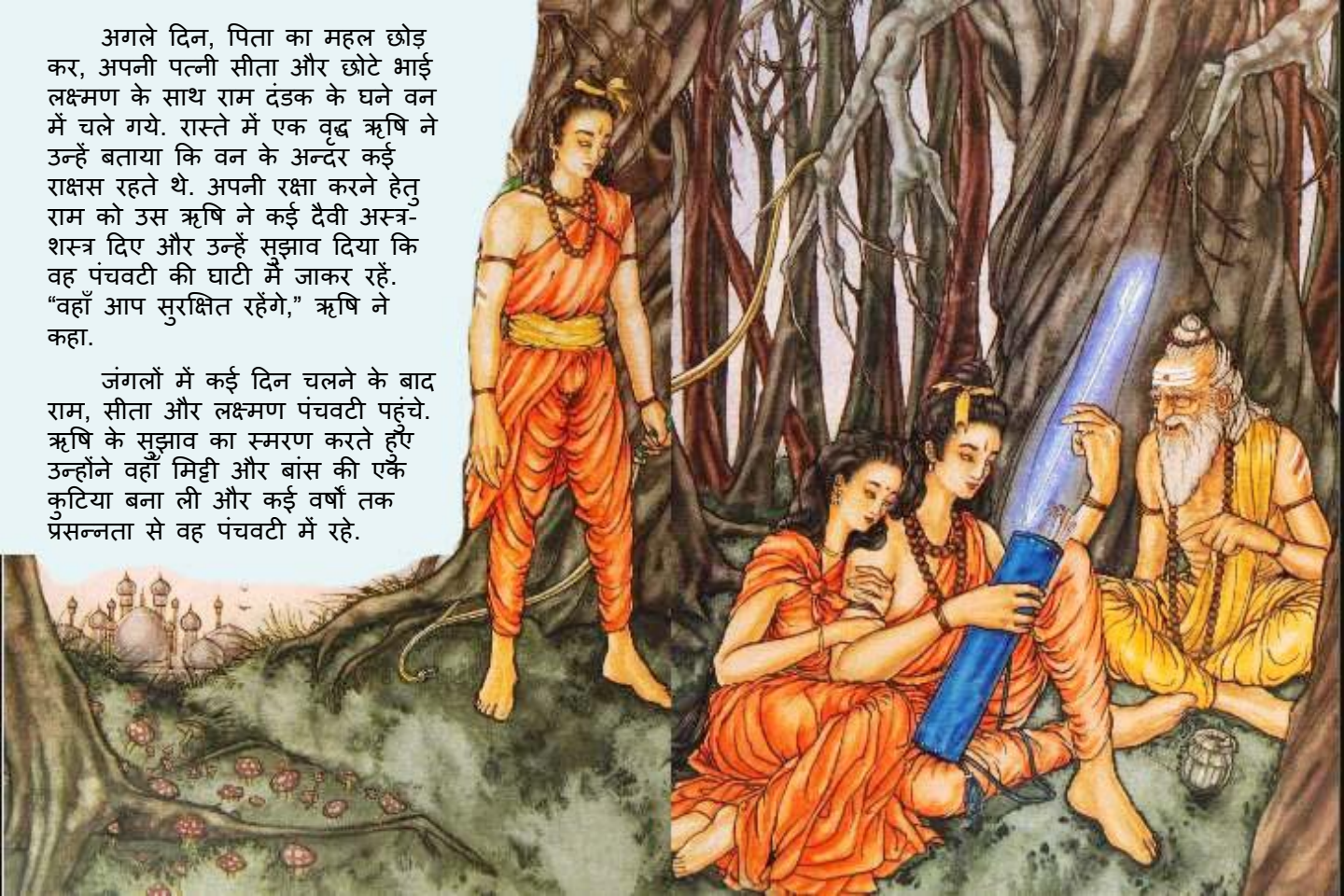

सीता चिल्लाई पर उसकी पुकार सुनने के लिए वहाँ पर कोई न था-राम और लक्ष्मण घने जंगल में कहीं भटक गये थे. राम को कुटिया से दूर ले जाने के लिए रावण ने एक छोटे हिरण को भेजा था. हिरण, जो एक राक्षस ही था, सहायता के लिए राम की तरह चिल्लाया और उसने लक्ष्मण को भी जंगल में आने के लिए उकसाया. राम की सहायता करने लक्ष्मण वन की ओर दौड़ा. इस तरह रावण को सीता कुटिया में अकेली मिली.

अब रावण ने अपने जादुई विमान को वहाँ बुलवाया. उसमें बिठा कर वह सीता को आकाशमार्ग से ले भागा. वह जंगलों और मैदानों और पहाड़ों के ऊपर उड़ते गये और फिर सागर पार कर अंतत राक्षस-राज्य लंका पहुंच गये.

राम और लक्ष्मण कई घंटों तक वन में भटकते रहे और तब जाकर वह अपनी कुटिया लौट पाये. जैसे ही उन्हें पता चल कि सीता कुटिया में नहीं थी वह समझ गये कि उनके साथ छल हुआ था और राक्षसों ने सीता का हरण कर लिया था.

दैवी बाणों से भरा अपना तूणीर और धनुष ले कर राम, लक्ष्मण सहित, सीता की खोज में निकल पड़े. यद्यपि जंगलों में और मैदानों में और पहाड़ों पर उन्होंने मीलों लंबी यात्रा की, उन्हें सीता का कोई चिन्ह कहीं न मिला.

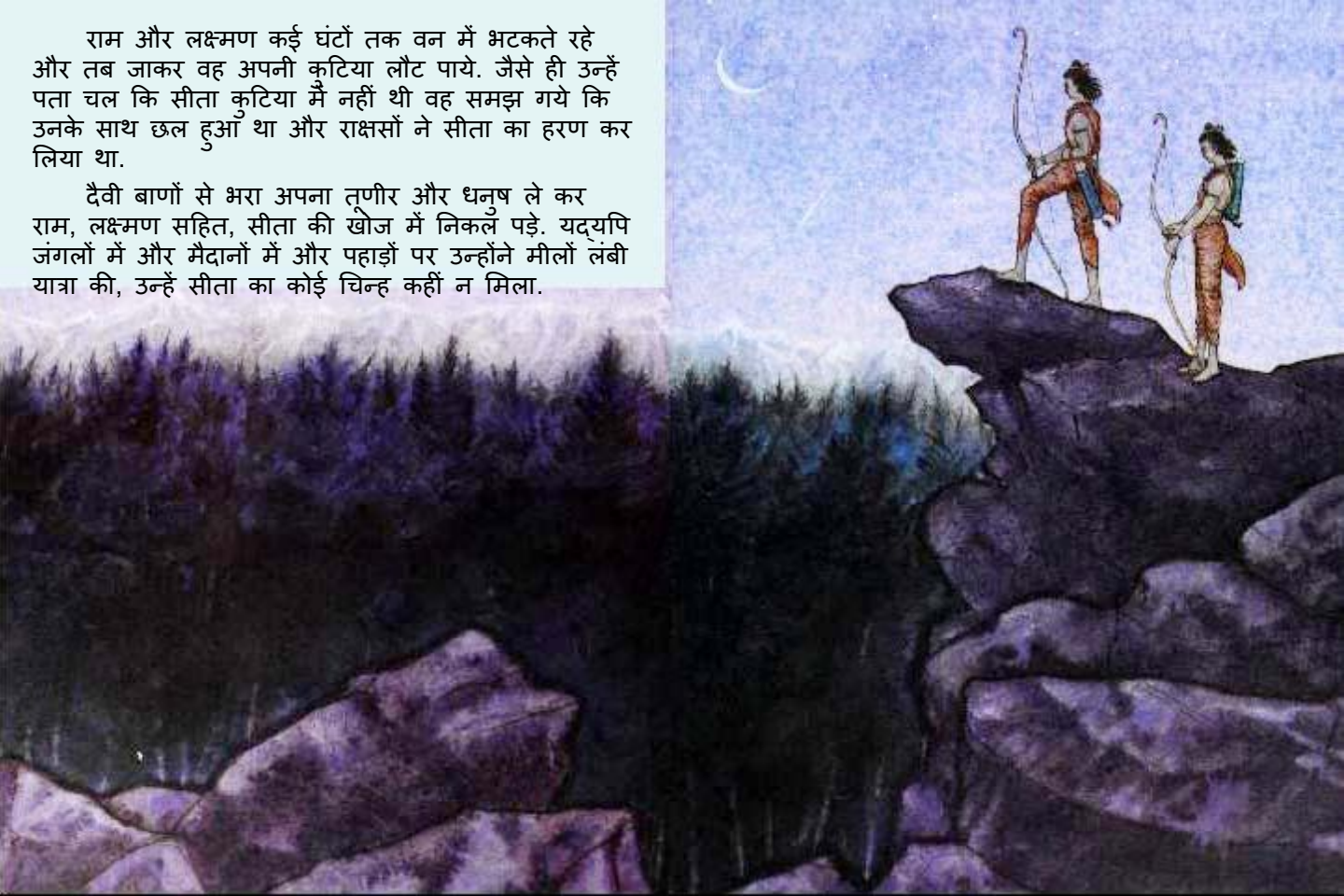

फिर एक दिन जब वह एक वृक्ष-युक्त घाटी के पार जा रहे थे, एक विशाल वानर कूद कर उनके रास्ते में आ खड़ा हुआ. उसने उनका अभिनंदन किया और कहा, “मैं हनुमान हूँ, वानरों का सेनापति.” उसने बताया कि उसने आकाश मार्ग से जाते हुए रावण के विमान को देखा था जिस में सीता भी बैठी थीं. हनुमान ने राम को आश्वासन दिया कि वह और उनकी सारी वानर सेना सीता को ढूँढने में उनकी सहायता करेंगे. हनुमान ने अपने हाथों से ताली बजाई और सैंकड़ों, हज़ारों वानर पहाड़ से नीचे आ गये.

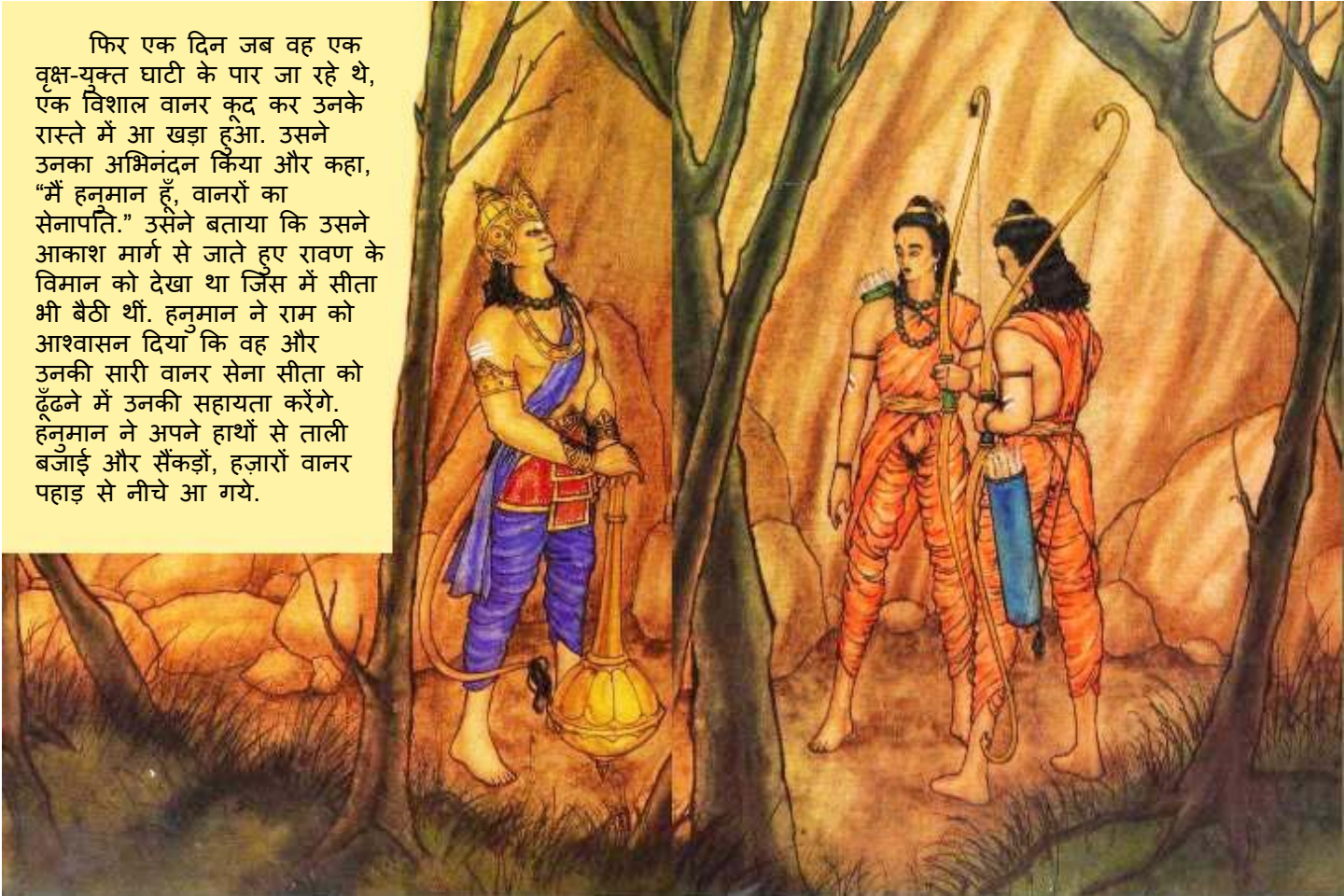

राम अपनी नई सेना के साथ पहाड़ों के ऊपर तब तक चलते रहे जब तक की वह सबसे ऊंची चोटी तक नहीं पहुँच गये. वहां धूप में एक गिद्ध अपने पंख फैलाए विश्राम कर रहा था. उसने भी रावण और सीता को देखा था. उसने रावण के विमान को लंका में उतरते देखा था.

“राम, अब तुम सीता को कभी वापस नहीं पा सकते,” गिद्ध ने कहा. “क्योंकि उस द्वीप तक फैला यह सागर है बहुत ही भयंकर और तूफानी है और राक्षसों के अतिरिक्त कोई उसे पार नहीं कर सकता.”

लेकिन राम हार मानने को तैयार न थे. वह अपनी सेना को लेकर सागर के किनारे आ गये. सागर में ऊंची-ऊंची लहरें उठ रही थीं और तट से टकरा रही थीं. राम समझ न पाए कि वह किस प्रकार सागर पार कर लंका पहुंच सकते थे. वह निराश होने वाले थे कि एक राक्षस-राजकुमार वहां प्रकट हो गया.

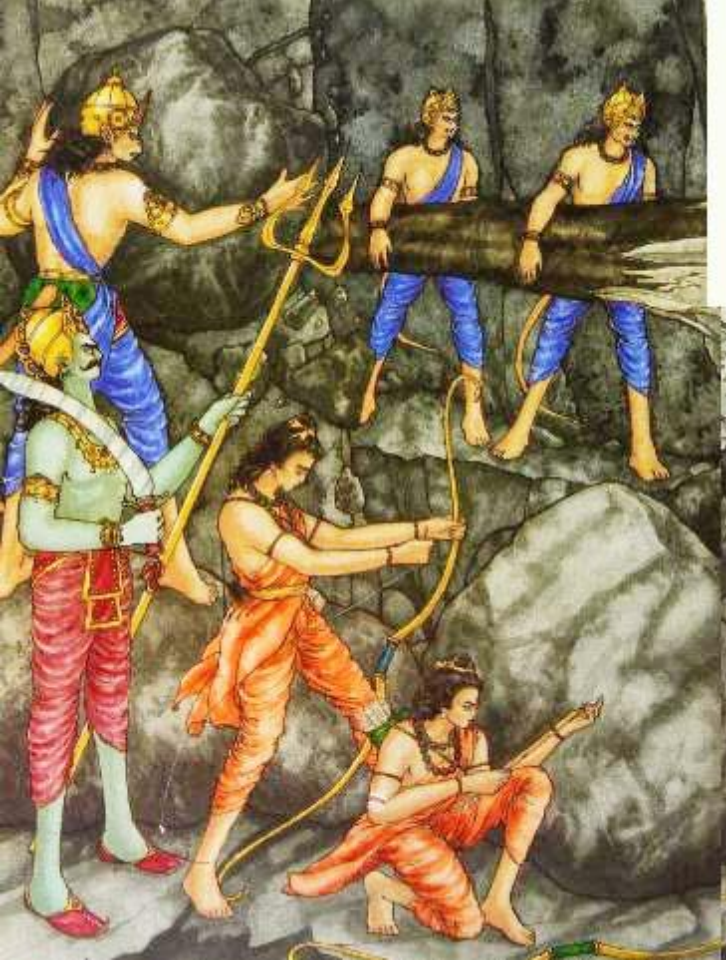

"मैं विभीषन हूँ, रावण का छोटा भाई," उसने कहा. "आपके समान मैं भी अपने भाई से घृणा करता हूँ. इसलिए उसका विनाश करने के लिए मैं आपके पास आपकी सहायता करने आया हूँ. लेकिन पहले हमें लंका तक पेड़ों और पत्थरों का एक पुल बनाना होगा."

तुरंत सब वानर पुल बनाने के काम में जुट गये. उन्होंने बड़े-बड़े पेड़ उखाड़ लिए और बड़ी-बड़ी चट्टानें पहाड़ों से तोड़ लीं और उन्हें सागर में फैंकने लगे.

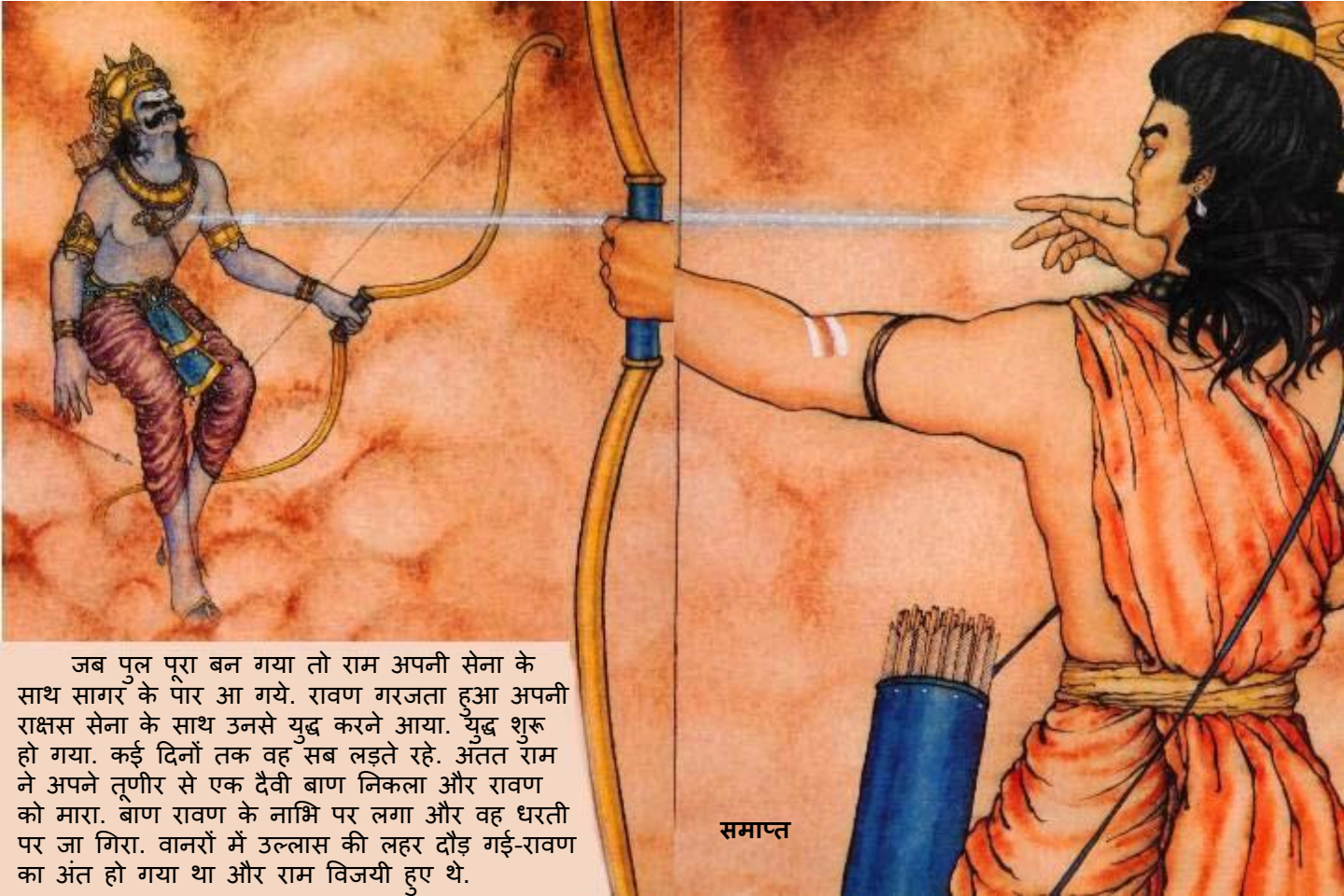

जब पुल पूरा बन गया तो राम अपनी सेना के साथ सागर के पार आ गये. रावण गरजता हुआ अपनी राक्षस सेना के साथ उनसे युद्ध करने आया. युद्ध शुरू हो गया. कई दिनों तक वह सब लड़ते रहे. अंतत राम ने अपने तूणीर से एक दैवी बाण निकला और रावण को मारा. बाण रावण के नाभि पर लगा और वह धरती पर जा गिरा. वानरों में उल्लास की लहर दौड़ गई-रावण का अंत हो गया था और राम विजयी हुए थे.

समाप्त